



## कृत्रिम बुद्धि का चैटबॉट में प्रयोग : संभावनाएँ और भविष्य की चुनैतियां

धरवेश कठेरिया<sup>1</sup> & राहुल कुमार<sup>2</sup>

एसोसिएट प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

पीएच.डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

**Paper Received On:** 25 Nov 2023

**Peer Reviewed On:** 28 Dec 2023

**Published On:** 01 Jan 2024

### Abstract

मनुष्य का जीवन शुरू से ही संघर्ष और जिज्ञासाओं से भरा रहा है. वह इन्हीं संघर्षों और जिज्ञासाओं के कारण अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं और तकनीक को इजाजत करता रहता है. इसी का परिणाम है कि मनुष्य आज जंगल- जमीन से आसमान तक पहुँच चुका है. मनुष्य ने परंपरागत संचार के साथ-साथ भाषा को भी सीखा जिसके कारण वह बृहद समाज का निर्माण कर सका. यातायात के लिए बस, ट्रेन, जहाज आदि अनेकों आविष्कार किए. आज वह इस मुकाम पर पहुँच चुका है कि अपना कार्य किसी मशीन द्वारा करवा सकता है. मशीन को मानव जैसा कार्य करवाने के लिए मनुष्य ने अपने कौशल से कृत्रिम बुद्धि नामक तकनीक का निर्माण किया. कृत्रिम बुद्धि कोई नई अवधारणा नहीं है लेकिन वर्तमान में इसका प्रयोग जिस कार्य के लिए किया जा रहा है वह नवीन तकनीक है. कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग कर मानव अपने से कहीं ज्यादा समझदार मशीनों के निर्माण करने में लगा है. जो मनुष्य की लगभग सभी समस्याओं का समाधान कर सकती है. इसी तकनीक का नाम चैट जीपीटी है. चैट जीपीटी तकनीक किसी भी समस्या के समाधान को क्षण भर में प्रस्तुत कर सकता है. चैट जीपीटी के माध्यम से आज तकनीकी, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक, चिकित्सा, सैन्य आदि क्षेत्रों की कुछ हद तक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जा रहा है. चैट जीपीटी आने वाले समय में प्रामाणिक और सटीक नतीजे देने में सक्षम साबित हो सकता है. ऐसी भविष्यवाणी विशेषज्ञों द्वारा की जा रही है.

**बीज शब्द :** बुद्धि, कृत्रिम बुद्धि, चैटबॉट, तकनीक, भविष्य

## शोध प्रश्न

इस शोध-पत्र के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या चैट जीपीटी-4 कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग कर मानव जैसे तर्करूप, विचार-विमर्श करने में सक्षम है? क्या चैट जीपीटी-4 द्वारा जटिल प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जा सकते हैं? जिसे अभी तक केवल मानव मस्तिष्क द्वारा किया जाता रहा है. क्या जीपीटी-4 सबको एक जैसे उत्तर देगा?

## उद्देश्य

चैट जीपीटी-4 की कार्यपद्धति को समझना. चैट जीपीटी-3.5 एवं चैटजीपीटी-4 के अन्तर को चिन्हित करना. चैट जीपीटी-4 कृत्रिम बुद्धि द्वारा मनुष्य की भांति जटिल समस्याओं का हल निकालने में सक्षम है. चैट जीपीटी से की जा रही अपेक्षाओं और चुनौतियों का विश्लेषण करना.

## शोधसीमा

इस शोध-पत्र में चैट जीपीटी-4 की कार्य पद्धति को समझने का प्रयास किया गया है. जिसमें वर्तमान में इसके उपयोग से आनेवाली संचार क्रांति की संभावना और भविष्य की आशंकाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना.

## शोधप्रविधि

प्रस्तुत शोध में 'कृत्रिम बुद्धि का चैटबॉट में प्रयोग :संभावनाएँ और भविष्य की चुनौतियाँ' विषय पर चैट जीपीटी-4 की कार्य पद्धति एवं इसके द्वारा कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग कर जटिल समस्याओं का समाधान निकालने, समस्याओं से संबंधित बिन्दुओं को चिन्हित करने और समस्या के कारणों का भावी हल निकालने के प्रयासों को समझाने के लिए विश्लेषणात्मक विधि और द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है. विभिन्न आलेखों का अध्ययन भी इस शोध में सम्मिलित है. विश्लेषणात्मक विधि के साथ अन्तर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि का भी प्रयोग किया गया है. प्रस्तुत अध्ययन को स्वरूप देने के लिए टेलीविजन माध्यम, सोशल मीडिया, विभिन्न समाचारपत्र में प्रकाशित विषय विशेष की खबरें, शोध

पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध आलेख, विभिन्न पुस्तकें, समसामयिक पत्र-पत्रिकाओं के साथ-साथ निर्धारित आचार-संहिताओं आदि का विश्लेषण भी किया गया है. प्रस्तुत शोध में अन्तर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि के माध्यम से शोध विषय से संबंधित आवश्यक तथ्यों को खोजने का प्रयास किया गया है.

### प्रस्तावना

मनुष्य हमेशा से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है. वह अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप साधन से साध्य तक पहुंचता है. दूसरे शब्दों में यूं कहें तो मनुष्य की आवश्यकताओं ने ही जरूरत के अनुसार वस्तु को इजाजत करने की ओर अग्रेषित किया है. यहाँ यह प्रश्न उठना स्वभाविक है कि क्या मनुष्य की जरूरत ने हमें मनुष्य जैसी कोई वस्तु बना दिया है? क्या हमें चलना, बोलना, हंसना, रोना जन्म के साथ ही सब कुछ आता है या फिर हमने इन्हें अपनी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं के कारण प्रयत्न एवं संघर्ष से प्राप्त किया या सीखा है. कुछ विद्वानों का यह भी कहना है कि मनुष्य को उसके जन्म से तो बहुत कुछ प्राप्त था, लेकिन सब कुछ प्राप्त नहीं था. मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बोली, भाषा, समाज और आज के संदर्भ में तो वैश्विक समाज का निर्माण किया है. मनुष्य अनवरत संघर्षरत रहा है, वह आज अपनी आवश्यकताओं से बहुत आगे निकल चुका है जिसके कारण भौतिकवादी समाज में प्रवेश कर गया है. इसी कारण वह अपनी सुख-सुविधाओं के लिए बिना रूके काम करने वाली युक्तियों एवं मशीनों का आविष्कार एवं विकास करना आरंभ किया. आज इसी संघर्ष के परिणामस्वरूप यातायात के लिए ई-साईकिल, बुलेट रेल, सुपर सोनिक जेट, प्रदूषण मुक्त बस, कार आदि अनेक ऐसे संसाधनों का प्रयोग हो रहा है. संचार के नवीन माध्यमों हेतु मोबाईल फोन, टेबलेट, कंप्यूटर, इंटरनेट, सोशल मीडिया, ई-मेल आदि का उपयोग. इन सभी के साथ अब स्वचलित मशीन के निर्माण पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, जिससे बिना किसी मानव श्रम से मशीनों द्वारा कार्य हो रहा है और इसे और अधिक सज्जम एवं सुविधायुक्त बनाया जा रहा है. तकनीकी विकास की दृष्टि से मनुष्य के कौशल एवं बुद्धि वाले कार्यों को सरल बनाने के लिए विशेष रूप से कार्य

किए जा रहे हैं, इसी के कारण कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) जैसी अवधारणात्मक मशीनों के विकास पर लगभग सभी तकनीकी कंपनियों में प्रतिस्पर्धा छिड़ी हुई है. वैसे तो कृत्रिम बुद्धि कोई नयी अवधारणा नहीं है.

### साहित्य पुनरावलोकन

- **Mehmet Firat**, 'How Chat GPT Can Transform Autodidactic Experiences and Open Education?' इनके अनुसार चैट जीपीटी-4 से छात्रों में सीखने की अनुभवों से क्रांति आ सकती है. जिसे वे स्वयं निर्देशित मशीनों द्वारा सीख सकते हैं. यह कई भाषाओं में एक साथ उपलब्ध होने से शिक्षा के क्षेत्र को सरल, सहज और वैज्ञानिक बना सकता है.
- **Brady D. Lundand Ting Wang** 'Chatting about Chat GPT: How may AI and GPT impact academia and libraries?' शोधपत्र में कृत्रिम बुद्धि (AI) आधारित चैट जीपीटी से अकादमिक और पुस्तकालय को प्रभावित करने वाले कारकों को बताया गया है. चैट जीपीटी शिक्षा एवं पुस्तकालय के क्षेत्र में नये रास्तों का विकास करेगा.
- **डॉ. मोहन लाल 'आर्य'** 'शिक्षक-शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि: भूमिका एवं विकास' में कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) के उपयोग से शिक्षा के क्षेत्र अनेक परिवर्तन हो सकते हैं. शिक्षा सबके लिए एवं सभी जगह आसानी से कृत्रिम बुद्धि से निर्मित मशीनों द्वारा प्राप्त की जा सकती है. कृत्रिम बुद्धि तकनीक को सीखने में छात्रों के साथ-साथ शिक्षक समुदाय के न सीखने के कारणों का भी पता लगाया जा सकता है तथा शिक्षा को वैश्विक बनाया जा सकता है.
- **डॉ. आनंद कुमार** 'कृत्रिम बुद्धिमता और भविष्य की आशंकाएँ' इस शोधपत्र में कृत्रिम बुद्धि से निर्मित मशीनों के लिए लोगों की आवश्यकता बहुत कम ही पड़ेगी, जिससे रोजगार में बड़ी मात्रा में गिरावट देखी जा सकती है. लेकिन तकनीकी क्षेत्र में रोजगार के नए क्षेत्र के साथ-साथ लाखों उच्च कौशल वाले रोजगारों में भी अवसर मिल सकते हैं. इन

सब में सबसे आवश्यक पहलू है जिसकी आशंका हो रही है, जब सभी प्रकार की मशीनों से चारों तरफ से घिर जाएंगे तो निजता नाम की कोई वस्तु की कल्पना कर पाना बेकार है.

### **कृत्रिम बुद्धि का संक्षिप्त इतिहास (Brief History of AI)**

वर्ष 1943 में पहली बार कृत्रिम न्यूरॉन्स मॉडल बनाया गया. न्यूरॉन की स्थितियों के लिए ऑन और ऑफ रखा गया. वर्ष 1955 में पहली बार कृत्रिम बुद्धि का विकास किया गया., जिसमें एलेन नेवेल और हर्बर्ट सीमोन का महत्वपूर्ण योगदान था. कृत्रिम बुद्धि कंप्यूटर के आविष्कार के बाद 1956 से चर्चा में है. कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) के जनक के रूप में जॉन मकार्थी को जाना जाता है, जिन्होंने पहली बार कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) शब्द को प्रयोग किया. इसके बाद 1966 में चैटबॉट का आविष्कार हुआ जिससे गणित संबंधी समस्याओं का हल निकाला जा सकता था. 1972 में पहली मानव आधारित रोबोट जापना द्वारा बनाया गया जिसका नाम वाबॉट-1 रखा गया. इसके बाद कृत्रिम बुद्धि एक्सपर्ट सिस्टम के आया जो मानव जैसे तर्क कर सकता था. 1997 में रूस के गैरी कासपारोव नामक शतरंज विश्व-विजेता को आई.बी.एम. द्वारा निर्मित कंप्यूटर ने हराया जो कृत्रिम बुद्धि आधारित था. वर्ष 2002 में पहली बार कृत्रिम बुद्धि ने लोगों के घरों में प्रवेश किया जो वैक्यूम क्लीनर के लिए बनाया गया, जिसका नाम रूम्बा था. 2006 कृत्रिम बुद्धि तकनीक व्यवसायिक दुनिया में प्रवेश कर गया जिसका उपयोग फेसबुक, नेटफ्लिक्स और ट्विटर जैसी करने लगी. वर्ष 2014 में ऐसी चैटबॉट का विकास किया गया जो लोगों की समस्याओं कृत्रिम बुद्धि आधारित ज्ञान के माध्यम से हल कर सकता था. 2020 में कोरोना काल से निपटने के लिए कृत्रिम बुद्धि का उपयोग वैक्सीन बनाने के लिए किया गया.

### **कृत्रिम बुद्धि (AI-Artificial Intelligence)**

कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग संगणक विज्ञान की एक शाखा के रूप किया जाता है. कृत्रिम बुद्धि की संकल्पना का मूल यह है, कि मानव बुद्धि (Human Intelligence) को कंप्यूटर द्वारा

निर्देशों के समूह या किसी प्रोग्राम के माध्यम से मशीन में हस्तांतरित करना जिससे कि निर्मित मशीन, मानव की भांति सोच-समझ कर स्वयं किसी कार्य को संपादित कर सके. समस्या का समाधान प्रस्तुत कर सके या स्वयं के तर्क के आधार पर विचार-विमर्श कर सके. कृत्रिम बुद्धि के शुरूआत में भाषा शिक्षा से संबंधित कार्यों को प्राथमिकता दिया गया क्योंकि भाषा ही एकमात्र ऐसा माध्यम है, जिससे बिना परिश्रम के किसी कार्य या समस्या का आसानी से संपादन या समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है. सां ख्यिकीय आंकड़े के अनुसार वैश्विक बाजार में कृत्रिम बुद्धि को मीडिया एवं मनोरंजन उद्योग में तीव्र गति देखी गई है. वर्ष 2018 में कृत्रिम बुद्धि का बाजार अमेरिकी मुद्रा में 1.8 बिलियन का था जो वर्तमान 2023 में 8.4 बिलियन का हो गया है.

### **चैटबॉट का परिचय**

चैटबॉट एक प्रकार का कंप्यूटर प्रोग्राम है, जो प्राकृतिक भाषा संसाधन एवं मशीन लर्निंग का प्रयोग कर निर्माण किया जाता है. इसका उपयोग सामान्यतः मैसेजिंग अनुप्रयोगों एवं इंटरनेट वेबसाइटों पर उपयोगकर्ताओं से टेक्स्ट या ऑडियो के माध्यम से स्वचलित संवाद स्थापित करता है. इसमें मुख्य रूप से इंटरकनेक्टेड नोड्स या कृत्रिम बुद्धि न्यूरान्स सूचनाओं को संसाधित करते हैं. जिससे उपयोगकर्ताओं की समस्याओं का हल डेटा-बेस के आधार पर करता है. चैटबॉट विशेष उपयोग के लिए उपयोगकर्ता के व्यावसायिक वर्गीकरण के आधार पर बनाये जाते हैं. जिससे वे संबंधित के बारे में संवाद स्थापित कर समस्या का हल निकालता है. वर्तमान की बड़ी-बड़ी कंपनियों तकनीकी से जुड़े अपने चैटबॉट बाजार में उतारा है, जिनमें गूगल का 'गूगल असिस्टेंट', अमेजन का अलेक्सा, सीरी आदि.

### **चैट जीपीटी**

चैट जीपीटी (Generated Pre-Trained Transformation) चैटबॉट की बहुत अधिक एडवांस तकनीक है, जिसका निर्माण ओपेन ए.आई. द्वारा किया गया है. चैट जीपीटी के महात्वपूर्ण संस्करण बाजार में आए जिसमें जीपीटी-3, जीपीटी-3.5 एवं जीपीटी-4 है.

जीपीटी-3 एवं जीपीटी-3.5 को सीमित साधन के रूप केवल टेक्स्ट द्वारा प्रश्न पूछा जा सकता है वो भी टाइप करके. जीपीटी-4 जो कृत्रिम बुद्धि का सबसे उन्नत रूप माना जा रहा है. जीपीटी-4 को अत्याधुनिक तकनीक को बड़े सूचना संग्रह से जोड़ा जा रहा है. इसके निर्माण से विषय विशेषज्ञों का मानना है कि ये जटिल समस्याओं का समाधान निकाल सकता है. जिससे ऐसे कृत्रिम बुद्धि आधारित मशीनों का निर्माण होगा जो स्वयं सोच-समझकर, विचार-विमर्श कर समस्या का हल निकाल सकता है. इसे मानव के द्वारा किए गए सभी आविष्कारों के ज्ञाता के रूप में भी देखा जा रहा है. जिससे समस्या का समाधान तो निकलेगा साथ ही साथ यह आगे की भविष्यवाणी भी कर सकता है. यह अपने सभी संस्करणों से अधिक उन्नत माना जा रहा है, जो दृश्य बोध, रचनात्मकता और संदर्भों को सटीकता से समझ सकता है. इसके साथ इसमें लेखन, पटकथा, संगीत, परियोजनाओं पर सयहोग की संभावना है. यह एक साथ 25000 शब्दों को प्रसंस्करण कर सकता है, जिस कारण लंबी वार्तालाप भी इससे किया जा सकता है. इसमें टेक्स्ट, इमेज आदि के द्वारा भी इनपुट दिया जा सकता है. यह 100 भाषाओं में हजारों बहु-विकल्पों का सही उत्तर दे सकता है. लेकिन इसके परिणाम सबसे अच्छा अंग्रेजी भाषा में देखने का मिला है. भारतीय भाषाओं में तेलुगू के साथ अन्य कई भाषाओं में अच्छे परिणाम हैं.

इस तकनीक का परीक्षण कई ऐसे प्रतियोगी और कौशल परीक्षा से भी किया जा रहा है. जीपीटी-4 नेयूएस मेडिकल लाइसेंसिंग परीक्षा और एमबीए परीक्षाओं सहित यूएस में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं को पास किया है. चैटजीपीटी ने तीसरे स्तर के इंजीनियरों के लिए Google कोडिंग साक्षात्कार को भी पास करने में 75 प्रतिशत स्कोर के साथ कामयाबी हासिल की. वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में यह विशाल छलांग मनुष्यों के प्रयास को आसान बनाने और हमारी कल्पना से परे उत्पादकता बढ़ाने में काफी मदद कर सकती है.

हालांकि भारत में होने वाली परीक्षाओं नीट की परीक्षा में चैट जीपीटी को केवल 45 प्रतिशत अंक मिले. जेईई एडवांस के प्रवेश परीक्षा में जीपीटी केवल ग्यारह प्रश्नों का

उत्तर दिया, जिसमें उसे निगेटिव में परिणाम मिला. कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट के स्नातक प्रवेश परीक्षा में जीपीटी ने व्यवसाय से संबंधित प्रश्नों सही का उत्तर देकर लगभग 66 प्रतिशत अंक प्राप्त कर आशाजनक परिणाम दिया. CLAT परीक्षा में जीपीटी ने लगभग 50 प्रतिशत प्रश्नों को हल कर सही उत्तर दिया, लेकिन रिजनिंग और अवधारणात्मक प्रश्नों को हल नहीं कर सका. जीपीटी भारत के सबसे कठिन परीक्षा मानी जाने वाली यूपीएससी को पास नहीं कर सका. हाल ही में कृत्रिम बुद्धि के गॉडफादर के रूप में प्रसिद्ध ज्योफ्री हिंटन ने गूगल से इस्तीफा दे दिया है. उनको कृत्रिम बुद्धि को बनाने पर पछतावा हो रहा है. उनके अनुसार कृत्रिम बुद्धि अभी ज्यादा बुद्धिमान नहीं है लेकिन हो सकता है आने वाले समय में यह मनुष्यों से कहीं ज्यादा बुद्धिमान हो जाए.

### **भविष्य की संभावनाएं**

जीपीटी शिक्षा व्यवस्था को यह पूरी तरह समाप्त कर सकता है, छात्रों को बिना पढ़े अपने नोट्स मिल सकते हैं, उन्हें गृह कार्य से छुटकारा मिल सकता है. बच्चों बिना पढ़े हो सकता है जीपीटी की सहायता से नकल से पास हो जाएं. छात्रों का मानसिक विकाश तीव्र गति हो सकता है. शिक्षकों की आवश्यकता ना के बराबर हो सकती है. बच्चों को स्कूल जाने की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी. आनेवाले समय में चैट जीपीटी से पत्रकारिता संबंधी कार्यों को कराया जा सकता है. जीपीटी द्वारा लिखित किसी खबर को लिखने में, प्रूफशोधन में, संपादन आदि कुछ ही मिनटों में कर सकता है. यह एक प्रश्न के कई उत्तर प्रस्तुत कर सकता है. गंभीर और संक्रामक बीमारियों के उपचार के लिए किसी फॉर्मूला का विकास कर ले. हो सकता है कि राजनीति में चुनाव प्रचार के लिए चैट जीपीटी का उपयोग अधिक किया जाए, क्योंकि इसके माध्यम से जनता के विचारों, भावनाओं, रूझान, झुकाव आदि को बदलने में आसानी होगी. आने वाले समय में यह सभी इंटरनेट सर्च इंजन को समाप्त कर सकता है.

## भविष्य की चुनौतियां

चैट जीपीटी के आ जाने से उपयोगकर्ताओं में सुरक्षा और गोपनीयता संबंधी समस्या आ सकती है, क्योंकि ये सूचनाओं को एकत्र कर सकता है. स्वस्थ सेवाओं में जीपीटी के उपयोग के कई चुनौतियाँ हैं, जिसमें किसी मरीज को कई रोगों के एक साथ निवारण हेतु जरूरत से ज्यादा दवाई देना या ऑपरेशन में चूक के कारण मरीज को गंभीर परिणाम भुगतने होंगे. मनुष्यों में सृजनात्मक संबंधी कमी आ सकती है, वे जीपीटी के अधीन हो सकते हैं. कॉपी राइट संबंधी चुनौतियाँ सामने आ सकती हैं, क्योंकि एक प्रश्न के कई उत्तर देना तो अलग बात है, पर किसी सृजनात्मक लेख से भी यह संभावित परिणाम दे सकता है, जो एक साथ कई लोग उपयोग में ले सकते हैं. इसमें लैंगिक पूर्वाग्रह संबंधी और नस्लों को नहीं समझ पाने की समस्या है. यह व्याकरण और पाठ को अच्छी तरह समझ सकता है, लेकिन संदर्भ नहीं दे पाता. चैट जीपीटी के आ जाने से उच्च कौशल संबंधी रोजगारों में अधिकता आएगी लेकिन निम्न कौशल वाले रोजगारों पर भारी पड़ सकता है. यह परिस्थिति जन्य भावनात्मक प्रश्नों के सटीक उत्तर देने में सक्षम नहीं हो सकता है. यह केवल एल्गोरिद्म और नियम बद्ध समस्याओं का हल निकाल सकता है, लेकिन इसके इतर प्रश्नों का उत्तर हो सकता है दे, परंतु मानक उत्तर नहीं दे सकता. यदि जीपीटी से यह पूछा जाए जलवायु परिवर्तन के कारण और इसे रोकने के लिए किसी मशीन का निर्माण करो तो हो सकता है, यह जलवायु परिवर्तन के कारण मनुष्य को समझे और इसे खत्म करने के लिए मशीनों का निर्माण करने लगे. राजनीति के क्षेत्र में जीपीटी भयावह और गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर सकता है. जीपीटी के माध्यम से किसी भी राजनेता का चरित्र धूमिल किया जा सकता है. किसी नेता के भाषण को जीपीटी की सहायता से मनमाना आकार दे सकते हैं और दूसरी बात यह है कि राजनेता द्वारा दी गई भाषण की सत्यता का पता लगाना कठिन कार्य हो जाएगा.

## शोध निष्कर्ष

चैट जीपीटी भविष्य में किसी भी समस्या का समाधान तीव्र गति से प्रस्तुत कर सकने में सक्षम होगा. यह शिक्षा जगत के लिए मील का पत्थर साबित होगा. जीपीटी के कारण मानव के बौद्धिक स्तर (IQ) को सबके लिए बराबर कर दे. लोगों को गहन चिंतन से मुक्ति मिल जाएगी. जीपीटी के द्वारा कई संक्रामक और गंभीर रोगों का सफल उपचार मिल जाएगा. राजनीति में जनता के विचारों, रूझानों, मांगों आदि के अनुरूप भाषण आदि को कुछ पल में तैयार कर देगा. किसी प्रोजेक्ट को कुछ क्षणों में पूरा कर देगा. किसी देश की आर्थिक समस्याओं का समाधान कुछ क्षणों में निकाल सकता है. किसी सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, मानसिक, आर्थिक, भौतिक आदि कई तरह की समस्याओं के एक साथ कई विकल्पों द्वारा समाधान प्रस्तुत कर सकता है. जीपीटी के कारण गरीब और गरीब और अमीर सम्राट बन सकता है. लोकतंत्र के लिए जीपीटी खतरा बन सकता है. इस तकनीक के माध्यम से तकनीकी तानाशाही अपने चरम-सीमा पर पहुँच सकती है. साथ ही चैट जीपीटी से मानव जीवन को भ्रामक और गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं. इसके स्वयं सीखने की प्रक्रिया मानव अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा हो सकता है. हो सकता है यह मानव के इतिहास का आखिरी पन्ना बनकर रह जाए, मशीनी युग मानव अस्तित्व को समाप्त कर दे.

## सहायक संदर्भ सूची

### ➤ पुस्तक सूची

- *Russell, S. Norving, P (2010). Artificial Intelligence A Modern Approach Third Edition. New Jersey: Pearson Publication.*
- *Sultan, S. (2017). Artificial Intelligence: Volume II. Expert of Course Publishing,*
- *Tegmark, M. (2017) Life 3.0 Being Human in the Age of Artificial Intelligence. Knopf.*
- *Qiufan, C. (2021, September). AI 2041. W H Allen*
- *Massimov, K. (2019). The next Master of the World Artificial Intelligence. Chennai, Tamil Nadu: Prowess Publishing.*

### ➤ शोध आलेख सूची

- Lund, Brady D. and Wang T. (2023, January). Chatting about ChatGPT : How may AlandGPT impact academia and libraries?  
<https://www.researchgate.net/publication/367161545>
- McGee, Robert W. (2023, February 14). Is Chat GPT Biased against Conservatives? An Empirica Study.  
[https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract\\_id=4359405](https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=4359405)
- McGee, Robert W. (2023). Annie Chan: Three Short Stories Written with Chat GPT, February 14.  
<https://ssrn.com/abstract=43594033>.
- Liu, X., Zheng, Y., Du, Z., Ding, M., Qian, Y., Yang, Z., & Tang, J. (2021). GPT understands, too. arXiv.  
<https://doi.org/10.48550/arXiv.2103.10385>
- Firat, M.(2023 January). How Chat GPT Can Transform Autodidactic Experiences and Open Education?  
<https://www.researchgate.net/publication/367613715>
- कुमार, आ. (2017, दिसंबर). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भविष्य की आशंकाए. *IJSIRS, Volume, 67-72.*
- 7. लाल, मो. (2021, अगस्त). शिक्षक-शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि: भूमिका एवं विकास. *JICR, lume XIII, Issue VIII, 1487-1493.*

### ➤ वेबसाइट/वेब लिंक सूची

- <https://chat.openai.com/chat>
- <https://www.mygov.in/>
- <https://www.digitalindia.gov.in/>
- <https://www.incredibleindia.org/content/incredible-india-v2/en.html>
- <https://www.indiaculture.nic.in/>
- <https://mea.gov.in/>
- 9. <https://www.jansatta.com/politics/double-edged-sword-artificial-intelligence-machines-computers-equipped-robots-labor-costs/2661824/>
- <https://www.chronicleindia.in/hindi/articles/india-and-artificial-intelligence>
- <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/artificial-intelligence-in-india>
- <https://ehindistudy.com/2022/10/11/history-artificial-intelligence-hindi/>
- <https://www.youtube.com/watch?v=jvErg2tk55o>